International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

विनोबा भावे के सर्वोदय संबंधी विचार

महेन्द्र पंडित

सीनियर रिसर्च फेलो, एम.ए., नेट,जे.आर.एफ., राजनीति विज्ञान विभाग, विनोबा भावे विश्वविद्यालय, हजारीबाग (झारखण्ड)

सार संक्षेपः–

सर्वोदय महात्मा गांधी व इनके पहले सत्याग्रही विनोबा भावे का सबसे महत्वपूर्ण राजनीतिक आंदोलन है। सर्वोदय सत्याग्रह की तरह हीं दो शब्दों के संयोजन से बना है अर्थात सर्व का अर्थ एक व सभी का उदय से है। इस प्रकार सर्वोदय का सही अर्थ सार्वभौमिक उत्थान या सभी का उत्थान या फिर सभी के कल्याण से होता है।

सर्वोदय अर्थात सबका उदय, सभी का विकास। सर्वोदय भारत का पुराना आदर्श है। विनोबा जी ने कहा है–सर्वोदय का अर्थ है सर्वसेवा के माध्यम से समस्त प्राणियों की उन्नति। 'सर्वोदय' ऐसे वर्गविहीन, जातिविहीन और शोषण मुक्त समाज की स्थापना करना चाहता है, जिसमें प्रत्येक व्यक्ति और समूह को अपने सर्वांगीन विकास का साधन और अवसर मिले।

विनोबा भावे कहते हैं–जब हम सर्वोदय का विचार करते हैं, तब उंच–नीच भाव वाली वर्ण व्यवस्था दीवार की तरह सामने आ खडी हो जाती है। उसे तोडे बिना सर्वोदय कभी स्थापित नहीं हो सकता है।

मुख्य शब्दः सर्वोदय, समावेशी विकास, जातिविहीन, विकेन्द्रीकरण, समाजवाद

प्रस्तावनाः–

सर्वोदय महात्मा गांधी व इनके पहले सत्याग्रही विनोबा भावे का सबसे महत्वपूर्ण राजनीतिक आंदोलन है। सर्वोदय सत्याग्रह की तरह हीं दो शब्दों के संयोजन से बना है अर्थात सर्व का अर्थ एक व सभी का उदय से है। इस प्रकार सर्वोदय का सही अर्थ सार्वभौमिक उत्थान या सभी का उत्थान या फिर सभी के कल्याण से होता है।

सर्वोदय विचारधारा का मानना है कि सत्ता का विकेन्द्रीकरण सभी क्षेत्रों में समान रूप से हों ताकि दिल्ली का शासन हमारे गांवों तक पहुंच सके। विनोबा जी आर्थिक सामाजिक व राजनीतिक क्षेत्रों में सत्ता के विकेन्द्रीकरण के पक्षधर हैं इस सर्वोदय समाज में किसी भी व्यक्ति का शोषण नही होगा।

इस समाज में रहने वाले प्रत्येक व्यक्ति, धैर्यवान, आत्मसंयमीत, अनुशासित, भौतिक सुखों की प्राप्ति से दूर होगें। ये अपने पास उतने ही वस्तुओं को इकट्ठा करेंगें जितनी उनकी आवश्यकता है।

सर्वोदय का उदय किसी एक क्षेत्र में उदय का पक्षधर नहीं है बल्कि सभी क्षेत्रों में समान रूप से उन्नति करने का समर्थक है। यहां प्रत्येक व्यक्ति सत्य, अहिंसा व प्रेम का पाठ पढ़ने के कटिबद्ध है।

शोध विधिः ऐतिहासिक, तुलनात्मक, विश्लेषणात्मक

शोध का उद्देश्यः–

प्रस्तुत शोध का उद्देश्य आचार्य विनोबा भावे के सर्वोदय संबंधी विचारधारा को विश्लेषित करना है। आचार्य विनोबा भावे के सर्वोदय संबंधी विचार किस प्रकार भारत की आजादी के बाद प्रभावित किया। साथ हीं साथ विनोबा जी के यह सर्वोदय संबंधी विचार भारतीय लोगों को किस प्रकार उनके विचारों में बदलाव लाया। उपर्युक्त उद्देश्यों को विस्तार से विश्लेषण करना है।

पूर्ण लेखः–

सर्वोदय महात्मा गांधी व इनके पहले सत्याग्रही विनोबा भावे का सबसे महत्वपूर्ण राजनीतिक आंदोलन है। सर्वोदय सत्याग्रह की तरह हीं दो शब्दों के संयोजन से बना है अर्थात सर्व का अर्थ एक व सभी का उदय से है। इस प्रकार सर्वोदय का सही अर्थ सार्वभौमिक उत्थान या सभी का उत्थान या फिर सभी के कल्याण से होता है।

इस महान उत्कृष्ट विचार से गांधीजी का पहला साक्षात्कार जॉन रस्किन द्वारा लिखित पुस्तक अनटू दिस लास्ट नामक पुस्तक से हुई जिसे गांधी जी ने इसका प्रकरण 1904 में दक्षिण अफ्रिका मे पढ़ा था। इस जॉन रस्किन द्वारा लिखित पुस्तक अनटू दिस लास्ट नामक पुस्तक गांधी पढ़ने के बाद गांधी जी का जीवन हीं बदल दिया।

रस्किन की इस विचारधारा में तीन मूलभूत सिद्धांत छिपी थी जो इस प्रकार है–

- सभी की भलाई में हीं व्यक्ति की भलाई निहित है।
- वकील का काम नाई के काम के समान हीं मूल्यवाण है क्योंकि सभी को अपने काम से आजीविका कमाने का समान अधिकार है
- श्रम जीवन अर्थात खेम जोतने वाले और हस्तशिल्पकार का जीवन ही जीने योग्य जीवन है।

इन सिद्धांतों ने महात्मा गांधी के मन में सामाजिक दायित्व के प्रति भ्रुण बोध जगाया। इस सिद्धांत का अपनी आत्मकथा माई एक्सपेरिमेंट विद ट्रूथ में लिखा है कि इनमें पहला सिद्धांत मुझे पता था। दूसरे सिद्धांत के बारे में कुछ हद तक पता था व तीसरे सिद्धांत दूसरें सिद्धांत मे हीं समाहित था।

सर्वोदय अपने मूल रूप में एक सामाजिक विचारधारा थी लेकिन भारत की स्वतंत्रता के पश्चात् इसकी सिद्धांत की आवश्यकता की मांग थी और विचारधारा एक अतिआवश्यक राजनीतिक सिद्धांत के रूप में बदल गया और इसे राजनीतिक इच्छाशक्ति और राज्य मशीनरी द्वारा सबसे अच्छे तरीके से लागू किया जा सकता था। यह सर्वोदय एकमात्र उद्देश्य को अक्षरशः और भावना से प्रभावित करेगा। यह समावेशी विकास व प्रगति है। गांधी, विनोबा और भारत के लिए इसका मतलब था जमीनी स्तर का उत्थान जो गांवो और भारत के उन गांवों और वंचित वर्गों से शुरू हुई और फिर ऊपरी तबके तक पहुंच गया।

युग पुरूष आचार्य विनोबा भावे का जन्म 11 सितम्बर 1895 को हुआ था। इस महापुरूष ने भूदान, डाकुओं के आत्मसमर्पण, जय जगत, सर्वोदय के विचारों द्वारा वैश्विक समस्याओं को अहिंसक तरीके से समाधान निकालने के जीवंत उदाहरण पेश किये।

सर्वोदय अर्थात सबका उदय, सभी का विकास। सर्वोदय भारत का पुराना आदर्श है। विनोबा जी ने कहा है–सर्वोदय का अर्थ है सर्वसेवा के माध्यम से समस्त प्राणियों की उन्नति। 'सर्वोदय' ऐसे वर्गविहीन, जातिविहीन और शोषण मुक्त समाज की स्थापना करना चाहता है, जिसमें प्रत्येक व्यक्ति और समूह को अपने सर्वांगीन विकास का साधन और अवसर मिले।

विनोबा भावे कहते हैं–जब हम सर्वोदय का विचार करते हैं, तब उंच–नीच भाव वाली वर्ण व्यवस्था दीवार की तरह सामने आ खडी हो जाती है। उसे तोडे बिना सर्वोदय कभी स्थापित नहीं हो सकता है। इसे सफल बनाने हेतु जातिभेद मिटाना होगा और आर्थिक विषमता दूर करनी होगी। सर्वोदय समाज की रचना व्यक्तिगत जीवन की शुद्धि पर हीं हो सकता है। जो व्रत नियम व्यक्तिगत जीवन में 'मुक्ति का साधन है' वे हीं जब सामाजिक जीवन में भी व्यहृत होंगें तब सर्वोदय समाज बनेगा। सर्वोदय की दृष्टि से जो समाज की रचना होगी, उसका आरंभ हमें अपने जीवन से हीं करना होगा। निजी जीवन में असत्य, हिंसा, अपरिग्रह आदि हुआ तो सर्वोदय नहीं होगा क्योंकि सर्वोदय समाज की विषमता को अहिंसा से हीं मिटाना चाहता है।

सर्वोदय में मानवता निहित है। मानव को आत्मा की पवित्रता, स्वतंत्रता, समानता, न्याय तथा भाईबंधु के आदर्शों से हमें अधिक महत्व देना चाहिए।

सर्वोदय, मार्क्सवाद, श्रमसंघवाद, समाजवाद से भिन्न है, क्योंकि सर्वोदय केवल यह मानकर चलता है कि किस प्रकार कोई वर्ग विभेद समाज तथा सामाजिक जीवन में अस्वभाविक है। मनुष्य में प्रकृति से प्रेम और सहयोग की भावनाएं प्रबल है। अतः संख्या के आधार पर दोष और वर्ग आधार पर समाज विभाजित करना सर्वथा अनुचित है।

सर्वोदय मनुष्य के नैतिक मूल्यों में विश्वास करता है। उससे आध्यात्मिक मूल्यों का जयघोष करता है। सर्वोदय का लक्ष्य कुछ या बहुत से व्यक्तियों का उत्थान नहीं अधिकतम में भी उत्थान नहीं वरन् यह सबके उत्थान की बात करता है यह सबका उत्थान की बात करता है।

आचार्य विनोबा भावे की दृष्टि में सर्वोदय के निम्नलिखित उद्येश्य है–

- आत्म संयम– आत्म संयम से तात्पर्य मन एवं इद्रियों वश में है तो किसी भी प्रकार का लोभ या मोह हमें पथभ्रष्ट नही कर सकता है।
- शोषणविहिन समाज– ऐसा समाज जिसमें गरीबों पर एक जैसा अधिकार हो। जितना अमीरों का उतना हीं गरीबों को समाज में किसी के ऊपर शोषण न हों।
- सर्वांगीण विकास– ऐसा समाज जिसमें सबका विकास हो सबका साथ हो। किसी कम या ज्यादा अधिकार प्राप्त न हों।
- लोकनीति के आधार पर शासन–सरकार द्वारा ऐसा नीति बनाई जाय जो लोककल्याण के लिए कार्य करें और सरकार लोकनीति के आधार पर हीं शासन चलाये।
- सत्ता का विकेन्द्रीकरण– सत्ता को एक स्थान पर केन्द्रित न किया जाय उसका भिन्न स्तरों पर विभाजित किया।

आचार्य विनोबा भावे ने सर्वोदय के प्रमुख तत्वों की व्याख्या इस प्रकार किये:–

पारिश्रमिक की समानता:–

आचार्य विनोबा भावे पारिश्रमिक की समानता कं आधार पक्षधर थे। उनका कहना था कि जितना वेतन एक नाई को मिलता है उतना हीं वेतन एक वकील को मिलना चाहिए। यह अवधारणा अनटू दिस लास्ट से लिया गया है।

प्रतियोगिता का अभाव:–

प्रतियोगिता संघर्ष को जन्म देती है। सर्वोदय संघर्ष को नहीं बल्कि सहकार को मानता है। इनका मानना है संघर्ष में हिंसा है, द्वेष है, क्रोध है। सर्वोदय का सारा भवन हीं अहिंसा की नींव पर खडा है।

साधन शुद्धि:–

सर्वोदय में साधन शुद्धि प्रमुख है। साध्य भी शुद्ध हो तथा साधन भी शुद्ध हो।

विकेन्द्रीकरण:–

सर्वोदय सत्ता और संवत्ति का विकेन्द्रीकरण चाहता है जिससे शोषण और दमन से बचा जा सके।

सर्वोदय के सिद्धांत:–

- सर्वोदय सिद्धांत में यहां कोई केन्द्रीकृत सत्ता नहीं होगी। गांवों में राजनीतिक और आर्थिक माहौल होगा।
- राजनीति सत्ता का साधन नहीं बल्कि सेंवा का माध्यम बनेगी और राजनीति लोकनीति की जगह लेगी।
- सभी लोग प्रेम, बंधुत्व, सत्य, अहिंसा, और आत्मबलिदान की भावना से ओतप्रोत होगें। समाज अहिंसा के आधार पर चलेगा।
- यहां कोई दल व्यवस्था नही होगी न हीं बहुमत का शासन होगा और समाज बहुमत के अत्याचार की बुराई से मुक्त होगा।

सर्वोदय समाज अपने व्यक्तियों को इस तरह प्रशिक्षित करता है कि वे बडी से बडी कठिनाईयों में भी अपने साहस व धैर्य कैसे त्यागता नहीं है। उसे सिखाया जाता है कि कैसे जीयें कैसे सामाजिक बुराईयों से बचें। इस प्रकार सर्वोदय समाज में व्यक्ति अनुशासित व संयमीत होता है।

यह समाज में ऐसे नियम बनाता है जिससे समाज के प्रत्येक व्यक्ति को आर्थिक लाभ मिले और कोई भूखे पेट न सोये। जिससे उसकी आवश्यकताओं की पूर्ति हो सके।

सर्वोदय समाज पश्चिमी देशों की तरह भौतिक संपन्नता और सुख के पीछे नही भागता है और न हीं उसे प्राप्त करने की कोई इच्छा होती है परंतु इस बात की इच्छा प्रकट करता है कि सर्वोदय समाज में रहने वाले व्यक्तियों को सामान्यतः रोटी, कपडा, मकान शिक्षा आदि की पूर्ति हो।

सर्वोदय विचारधारा का मानना है कि सत्ता का विकेन्द्रीकरण सभी क्षेत्रों में समान रूप से हों ताकि दिल्ली का शासन हमारे गांवों तक पहुंच सके। विनोबा जी आर्थिक सामाजिक व राजनीतिक क्षेत्रों में सत्ता के विकेन्द्रीकरण के पक्षधर हैं इस सर्वोदय समाज में किसी भी व्यक्ति का शोषण नही होगा।

इस समाज में रहने वाले प्रत्येक व्यक्ति, धैर्यवान, आत्मसंयमीत, अनुशासित, भौतिक सुखों की प्राप्ति से दूर होगें। ये अपने पास उतने ही वस्तुओं को इकट्ठा करेंगें जितनी उनकी आवश्यकता है।

सर्वोदय का उदय किसी एक क्षेत्र में उदय का पक्षधर नहीं है बल्कि सभी क्षेत्रों में समान रूप से उन्नति करने का समर्थक है। यहां प्रत्येक व्यक्ति सत्य, अहिंसा व प्रेम का पाठ पढ़ने के कटिबद्ध है।

निष्कर्षः–

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि आचार्य विनोबा भावे का सर्वोदय विचार लोगों के कल्याण पर आधारित था। इस विचारधारा ने अमीर और गरीब दोनों वर्गों के उत्थान पर बल दिया। इस सर्वोदय संबंधी विचार को जॉन रस्किन द्वारा लिखित पुस्तक अनटू दिस लास्ट नामक पुस्तक से हुई। परंतु गांधी जी व आचार्य विनोबा भावे ने जैसे गांधीवादियों ने इस शब्द का प्रयोक करके उसे भारतीय समाज में व्यवहारिक प्रयोग कर भारतीय समाज की एक नई दिशा दी। इस विचारधारा ने यह सुनिशिचित किया कि आत्मनिर्णय और समानता भारतीय समाज के सभी वर्गों तक कुशलतापूर्वक पहुंचे। सर्वोदय आंदोलन का मुख्य उद्देश्य अहिंसा की अवधारणा पर एक नये भारत की स्थापना करना था साथ हीं साथ इस आंदोलन का उद्देश्य भारत की सामाजिक, नैतिक व राजनीतिक स्वतंत्रता की विकास करना था।

संदर्भ सूचीः–

1. सुक्तिसंग्रह,
2. सर्वोदय दर्शन,
3. भावे, विनोबा.(1996)''साहित्य''खंड. 16 परमधाम प्रकाशन, पवनार. वर्धा.(हिंदी)।
4. भावे, विनोबा.(1996)''भूदानः विचार–दर्शन'',मैत्री (भूदान यज्ञ विशेषांक). अगस्त–सितंबर (हिंदी)।
5. भावे, विनोबा.(1965) सुलभ ''ग्रामदान'' सर्व सेवा संघ प्रकाशन. राजघाट वाराणसी. (हिंदी)।
6. भोले, एल0एम0.(2007).''ग्रामस्वराज :इक्कीसवीं सदी की अनिवार्यता'' अमानी इंटरनेशनल पब्लिशर्स. कील.
7. जयप्रकाश, नारायण.(2001).''सर्व की क्रांति'', मैत्री, मार्च–अप्रैल (हिंदी)।
8. नारगोलकर, वसंत.'(1963).'द क्रीड ऑफ सेंट विनोबा'' भारतीय विद्याा भवन, बाम्बे,